Siddhanta's International Journal of Advanced Research in Arts & Humanities
Vol. 2, No. 5, May - June 2025

सरगुजा जिले की अनुसूचित जनजातियों की शैक्षिक स्थिति एवं क्षेत्रीय विषमताओं का भौगोलिक अध्ययन

डॉ. अरूणा कुजूर

पूर्व सहा. प्रा. (भूगोल), होली क्रॉस वीमेंस कॉलेज अंबिकापुर (छ.ग.)

शोध सारांश

शिक्षा किसी भी समाज के सामाजिक एवं आर्थिक विकास का महत्वपूर्ण आधार है। अनुसूचित जनजातियों के समग्र विकास में शिक्षा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह उन्हें मुख्यधारा से जोड़ने तथा जीवन स्तर में सुधार लाने का प्रभावी माध्यम प्रदान करती है। सरगुजा जिला जनजातीय बहुल क्षेत्र है, जहाँ उरांव, गोंड, कोरवा, पंडो, नगेशिया, कंवर, बैगा आदि जनजातियाँ निवास करती हैं। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य सरगुजा जिले की अनुसूचित जनजातियों की शैक्षिक स्थिति का मूल्यांकन करना तथा क्षेत्रीय स्तर पर विद्यमान शैक्षिक विषमताओं का भौगोलिक विश्लेषण करना है। अध्ययन में क्षेत्रीय सर्वेक्षण से प्राप्त प्राथमिक आँकड़ों का उपयोग किया गया है। अध्ययन से ज्ञात होता है कि जनजातीय क्षेत्रों में शिक्षा का स्तर लगातार बढ़ रहा है, किन्तु विकासखंडों एवं ग्रामीण–नगरीय क्षेत्रों के मध्य महत्वपूर्ण विषमताएँ देखने को मिलती हैं। महिला साक्षरता, विद्यालयी सुविधाओं की उपलब्धता तथा उच्च शिक्षा तक पहुँच में भी क्षेत्रीय आधार पर पर्याप्त अंतर पाया जाता है। अध्ययन से स्पष्ट है कि जनजातीय समुदायों में शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ी है। अध्ययन यह भी दर्शाता है कि भौगोलिक स्थिति, आर्थिक दशा, शैक्षणिक सुविधाओं की उपलब्धता तथा सामाजिक परिस्थितियाँ जनजातीय शिक्षा को प्रभावित कराने वाले महत्वपूर्ण कारक हैं। प्रस्तुत अध्ययन ग्रामों के संतुलित विकास एवं क्षेत्रीय विषमताओं को कम करने हेतु उपयोगी सुझाव प्रस्तुत करता हैं।

शब्द कंजीः अनुसूचित जनजाति, शैक्षिक स्तर, समग्र विकास, क्षेत्रीय विषमता, आर्थिक दशा।

भूमिका–

शिक्षा मानव विकास का सबसे महत्वपूर्ण साधन है, जो व्यक्ति के ज्ञान, कौशल, जागरूकता तथा सामाजिक सहभागिता को बढ़ाने में सहायक होता है। किसी भी समाज की प्रगति उसके शैक्षिक स्तर से मापी जाती है। शिक्षा जनजातीय समुदायों को आर्थिक सशक्तिकरण तथा बेहतर जीवन के अवसर प्रदान करने का प्रभावी माध्यम है। सरगुजा जिले की भौगोलिक संरचना मुख्यतः पठारी एवं वनाच्छादित है, जहाँ आज भी अनेक जनजातीय ग्राम दुर्गम क्षेत्रों में स्थित हैं। सरकार द्वारा जनजातीय शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न योजनाएँ संचालित की जा रही हैं, फिर भी शैक्षिक उपलब्धियों में क्षेत्रीय असमानताएँ स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं। प्रस्तुत अध्ययन में सरगुजा जिले की अनुसूचित जनजातियों की शैक्षिक स्थिति का विश्लेषण उनके शैक्षिक स्तर के आधार पर किया गया है। अध्ययन के लिये जनसंख्या को श्रेणियों में वर्गीकृत कर शिक्षा की संरचना का विश्लेषण किया गया है। इसके माध्यम से जनजातीय समुदायों में शिक्षा के प्रसार, शैक्षणिक उपलब्धि के स्तर तथा विभिन्न क्षेत्रों के मध्य विद्यमान विषमताओं को समझने का प्रयास किया गया है। अतः प्रस्तुत अध्ययन न केवल जनजातीय शिक्षा की वर्तमान स्थिति को समझने में

सहायक होंगे, बल्कि भविष्य में शिक्षा संबंधी योजनाओं एवं नीतियों के निर्माण के लिए भी उपयोगी आधार प्रदान करेंगे।

अध्ययन क्षेत्र–

अध्ययन क्षेत्र छत्तीसगढ़ राज्य के उत्तर पूर्वी भाग में स्थित अविभाजित सरगुजा जिला पर्वत श्रृंखलाओं से घिरा हुआ है। है। जिसका विस्तार 23° 04′ 25″ उत्तरी अक्षांश से 24° 06′ 17″ उत्तरी अक्षांश तथा 81° 32′ 40″ पूर्वी देशांतर से 84° 04′ 40″ पूर्वी देशांतर के मध्य है। इसका कुल क्षेत्रफल 15,771.75 वर्ग किलोमीटर है जन जिसके 8645.7 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल पर वनों का विस्तार है। यह अनुसूचित जनजाति बाहुल्य क्षेत्र है। यहाँ कई प्रकार के जनजातीय समुदाय दुर्गम पहाड़ी इलाकों में प्रकृति के सान्निध्य में अपना जीवन यापन कर रहे हैं। यहाँ गोड़, उराँव, कमार, कोरवा, पहाड़ी कोरवा, पंडो, कोड़ाकू, नगेशिया, बिरहोर, माँझी, मझवार, खैरवार, खिरवार, चेरवा, अगरिया आदि जनजातियाँ निवास करती हैं। इस जिले में गोंड जनजाति की जनसंख्या सर्वाधिक है। 2011 की जनगणना के अनुसार सरगुजा जिले की कुल जनसंख्या 2,359,886 है जिसमें पुरुष 1,193,129 एवं महिलाएं 1,66,757 हैं जिले में जनसंख्या घनत्व 150 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है। कुल जनसंख्या में अनुसूचित जनजातियों का 55.11 प्रतिशत है। जिले की 89.71 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामों में एवं 10.29 प्रतिशत जनसंख्या नगरों में निवास करती है। जिले में औसत साक्षरता 60 प्रतिशत है पुरुषों में औसत साक्षरता 69.53 प्रतिशत एवं स्त्रियों में 50.32 प्रतिशत है।

अध्ययन के उद्देश्य –

1. सरगुजा जिले की अनुसूचित जनजातियों की शैक्षिक स्थिति का अध्ययन करना।
2. चयनित ग्रामों में जनजातीय शैक्षिक विकास का क्षेत्रीय आधार पर विश्लेषण करना।
3. चयनित ग्रामों में जनजातीय शिक्षा को प्रभावित करने वाले कारकों का मूल्यांकन करना।

आंकड़ों के स्त्रोत –

प्रस्तुत अध्ययन सरगुजा जिले के चयनित जनजातीय ग्रामों की शैक्षिक स्थिति एवं क्षेत्रीय विषमताओ के भौगोलिक विश्लेषण पर आधारित है। अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आंकड़ों का उपयोग किया गया। प्राथमिक आंकड़ों का संकलन क्षेत्रीय सर्वेक्षण के माध्यम से किया गया, जिसके अंतर्गत चयनित जनजातीय ग्रामों में परिवारों से संरचित प्रश्नावली एवं साक्षात्कार द्वारा जानकारी प्राप्त की गई। द्वितीयक आंकड़े भारत की जनगणना रिपोर्ट 2011 एवं जिला सांख्यिकी पुस्तिका सरगुजा 2011 से प्राप्त किए गए। सरगुजा जिला 19 विकासखण्डों में विभक्त है। अतः अध्ययन संबंधी प्राथमिक आंकड़ों के संकलन के लिये सर्वप्रथम प्रत्येक विकासखण्ड से एक–एक गाँव सोद्देश्य निर्दशन विधि द्वारा चयनित किया गया चूंकि अध्ययन अनुसूचित जनजातियों पर आधारित है अतः ऐसे ग्रामों को लिया गया जिसमें अनुसूचित जनजातियों की जनसंख्या 60 प्रतिशत से अधिक है। तत्पश्चात् जिला जनसांख्यिकीय प्रोफाइल जनगणना वर्ष 2011 के आधार पर प्रत्येक गांव की जनसंख्या से 20 प्रतिशत जनसंख्या को अध्ययन के लिये चुना गया। इस प्रकार 887 परिवार चयनित हुये जिनका अध्ययन करने के लिये परिवारों से प्रश्नावली एवं साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से आवश्यक जानकारी प्राप्त की गई।

विधितंत्र –

चयनित ग्रामों में सरगुजा जिले की अनुसूचित जनजातियों की शैक्षिक स्थिति एवं क्षेत्रीय विषमताओं का ग्रामवार विश्लेषण किया गया। जनजातियों की शैक्षणिक स्थिति की जानकारी एकत्रित कर उन्हें प्राथमिक, पूर्व माध्यमिक, माध्यमिक, उच्चतर माध्यमिक, स्नातक, स्नातकोत्तर तथा अन्य में वर्गीकृत कर अध्ययन किया गया। संकलित आँकड़ों का वर्गीकरण, सारणीयन एवं

विश्लेषण सांख्यिकीय विधियों की सहायता से किया गया। शैक्षणिक स्तर के वितरण को प्रतिशत में दर्शाया गया तथा चयनित ग्रामों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। प्राप्त परिणामों को स्पष्ट एवं प्रभावी रूप से प्रस्तुत करने के लिए सारणियों तथा दण्ड आरेखों का उपयोग किया गया।

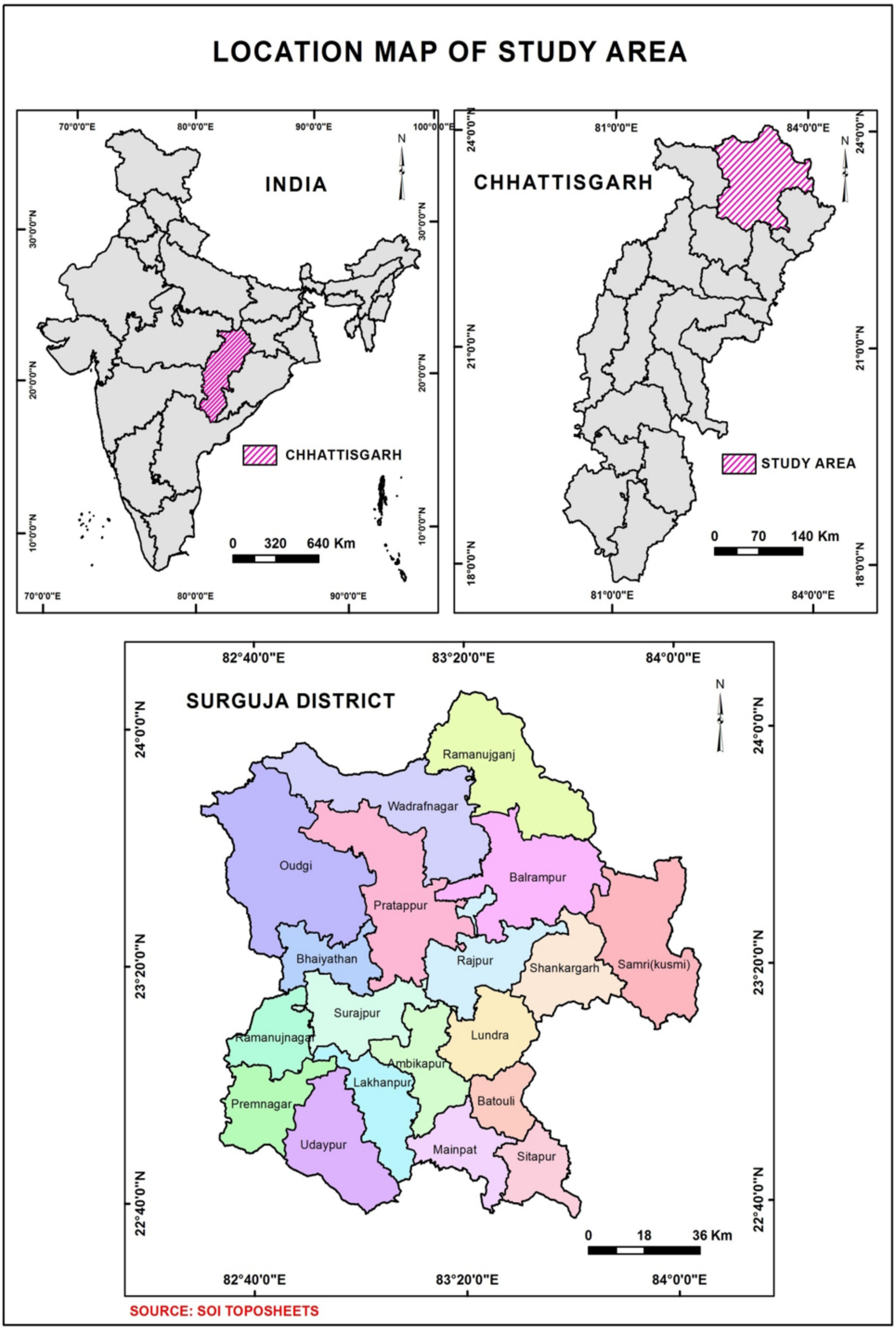

Map no. 1.1

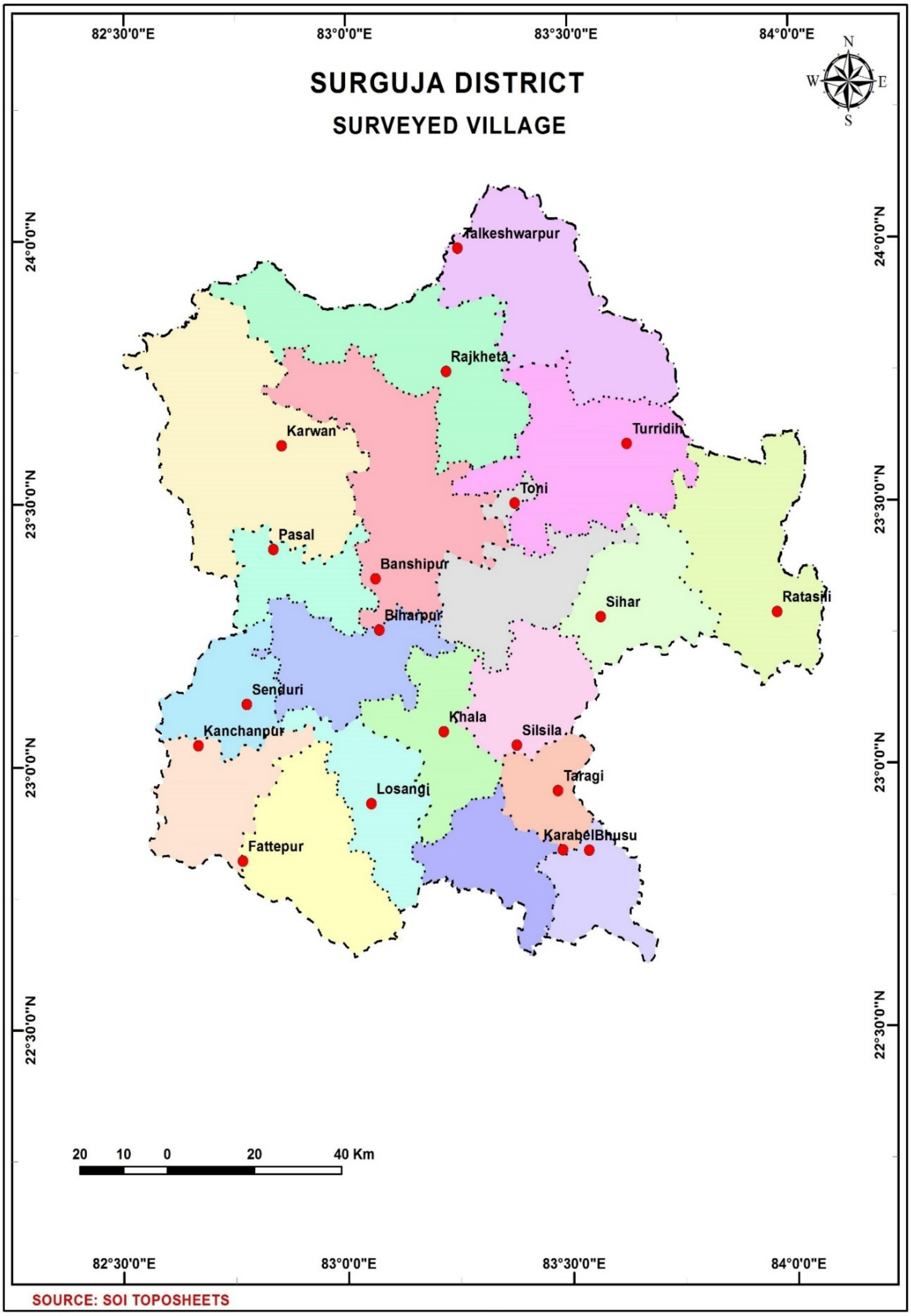

Map no-1. 2

सरगुजा जिले की अनुसूचित जनजातियों की शैक्षिक स्थिति–

जनजातीय समाज की बात करें तो भारत सरकार द्वारा जनजातियों को शिक्षित करने के लिये गांव–गांव में स्कूल खोले गये हैं, लेकिन वे लोग शिक्षा के प्रति जागरूक नहीं है। ग्राम में निवास करने वाले अधिकांश जनजातीय परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं होती है। यदि वे बच्चों

को स्कूल भेजते हैं तो इनके जीवनयापन के संघर्ष तथा पारंपरिक श्रम विभाजन की योजना असफल हो जाती है। दूसरी बड़ी समस्या यह है कि बच्चों में शिक्षा के प्रति कोई रूचि नहीं होती है, जिससे वे सुविधा देने पर भी स्कूल नहीं जाते हैं।

शैक्षणिक वर्ग को दो भागों में बांटा गया है – (1) अनौपचारिक शिक्षा (2) औपचारिक शिक्षा–

1. **अनौपचारिक शिक्षा –** यह शिक्षा उनके लिये संचालित की जाती है जो किसी कारणवश औपचारिक शिक्षा में सहभागी नहीं हो पाते हैं।
2. **औपचारिक शिक्षा –**औपचारिक शिक्षा व्यवस्था कक्षा आधारित हैं जिसमें विद्यार्थी विद्यालय जाकर नियमित शिक्षा ग्रहण करता है। इसमें प्राथमिक पूर्व माध्यमिक, माध्यमिक, उच्चतर माध्यमिक, उच्च एवं तकनीकी तथा व्यवसायिक शिक्षा को सम्मिलित किया जाता है।

तालिका क्र. 1.1
सरगुजा जिला : जनजातियों की शैक्षणिक गुणवत्ता

(प्रतिशत में)

क्र.	चयनित ग्राम	प्राथमिक	पूर्व माध्यमिक	माध्यमिक	उच्चतर माध्यमिक	स्नातक	स्नातकोत्तर	अन्य
1	खाला	26.82	20.11	15.08	13.97	11.17	7.26	5.59
2	तुर्रीडीह	19.78	15.38	23.08	27.47	8.79	4.4	1.1
3	तरागी	18.35	18.35	23.85	23.85	8.26	3.67	3.67
4	पासल	24.39	21.95	17.07	19.51	9.76	4.88	2.44
5	रतासिली	21.23	16.78	17.66	13.42	16.44	11.11	3.34
6	लोसँगी	31.58	24.21	16.84	14.74	9.47	2.11	1.05
7	सिलसिला	24.36	19.23	22.22	18.38	7.26	2.14	6.41
8	काराबेल	13.41	18.9	23.78	21.34	10.98	7.39	3.66
9	करवाँ	28.57	19.05	19.05	14.29	9.52	4.76	4.76
10	बंशीपुर	28.97	25.23	23.37	15.89	4.21	0.93	1.4
11	कंचनपुर	25.41	18.25	19.84	21.43	9.52	3.17	2.38
12	तोनी	38.96	23.38	20.33	12.93	1.7	1.4	1.3
13	सेन्दुरी	28.85	22.44	20.51	21.79	3.21	2.56	0.64
14	तालकेश्वरपुर	32.44	26.72	18.32	16.41	4.2	1.15	0.76
15	सिहार	34.04	21.28	21.28	13.83	5.32	3.19	1.06
16	भूसू	16.67	23.66	21.51	23.66	7.53	4.3	2.67
17	बिहारपुर	21.13	20.42	24.65	25.34	4.23	2.82	1.41
18	फत्तेहपुर	29.55	20.46	13.64	15.91	9.08	6.81	4.55
19	रजखेता	32.33	25.19	19.25	19.88	2.48	0.63	0.24
	कुल	**26.39**	**22.75**	**20.08**	**17.91**	**6.84**	**3.56**	**2.47**

स्रोतः व्यक्तिगत सर्वेक्षण 2016

सर्वेक्षित अनुसूचित जनजातियो में शैक्षणिक स्तर ज्ञात करने के लिये औपचारिक शिक्षा को आधार माना गया है जिसका विवरण तालिका क्रमांक 1.1 (मानिचित्र क्र. 1.3) में दिया गया है ।

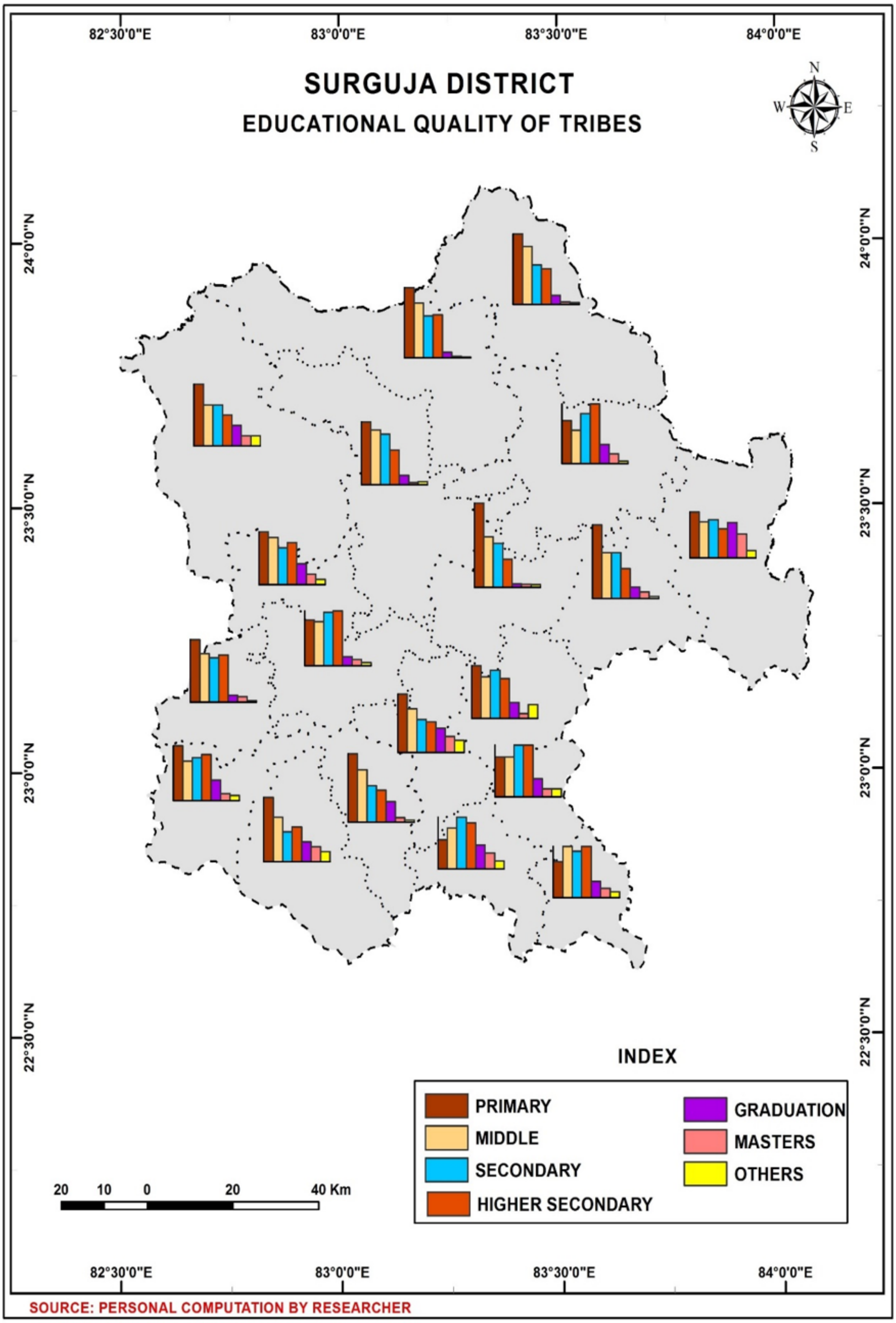
82°30'0"E
83°0'0"E
83°30'0"E
84°0'0"E
SURGUJA DISTRICT
EDUCATIONAL QUALITY OF TRIBES
N
W
E
S
24°0'0"N
23°30'0"N
23°0'0"N
22°30'0"N
INDEX
PRIMARY
MIDDLE
SECONDARY
HIGHER SECONDARY
GRADUATION
MASTERS
OTHERS
20 10 0 20 40 Km
SOURCE: PERSONAL COMPUTATION BY RESEARCHER

Map. No. 1.3

1. **प्राथमिक शिक्षा** – सर्वेक्षित परिवारों में प्राथमिक शिक्षा का औसत 20.39 प्रतिशत है। प्राथमिक शिक्षा ग्राम तोनी में सर्वाधिक 38.96 प्रतिशत तथा सबसे कम ग्राम काराबेल में 13. 41 प्रतिशत है। जनजातीय आधार पर पहाड़ी कोरवा में सर्वाधिक 50.23 प्रतिशत एवं बैगा में 47.32 प्रतिशत प्राथमिक शिक्षा प्राप्त है।
2. **पूर्व माध्यमिक शिक्षा** –सर्वेक्षित परिवारों में पूर्व माध्यमिक शिक्षा का औसत 22.75 प्रतिशत है। यह शिक्षा ग्राम तालकेश्वरपुर में सर्वाधिक 26.72 प्रतिशत है तथा सबसे कम ग्राम तुर्रीडीह में 15.38 प्रतिशत है। जनाजातीय आधार खिरवार में सर्वाधिक 28.21 प्रतिशत एवं पण्डो में 27.18 प्रतिशत पूर्व माध्यमिक शिक्षा प्राप्त है।

तालिका क्र. 1.2
सरगुजा जिला : जातिवार शैक्षणिक स्तर

(प्रतिशत में)

क्र.	जनजाति	प्राथमिक	पूर्व माध्यमिक	माध्यमिक	उच्चतर माध्यमिक	स्नातक	स्नातकोत्तर	अन्य
1	अगरिया	38.52	26.81	18.31	16.36	0	0	0
2	बैगा	47.32	22.92	16.34	13.42	0	0	0
3	चेरवा	24.74	13.88	14.79	46.59	0	0	0
4	गोंड	17.74	22.13	15.52	32.32	5.37	4.21	2.71
5	कंवर	16.01	21.38	21.22	27.41	6.21	4.94	2.83
6	खैरवार	29.21	24.13	21.81	24.85	0	0	0
7	खिरवार	23.13	28.21	22.11	26.55	0	0	0
8	कोड़ाकू	24.25	23.14	34.36	18.25	0	0	0
9	कोरवा	22.24	20.77	22.13	25.14	4.31	3.92	1.49
10	नगेशिया	24.41	23.28	20.24	22.86	3.99	3.86	1.36
11	पहाड़ी कोरवा	50.23	19.12	21.24	9.41	0	0	0
12	पण्डो	25.27	27.18	26.32	21.23	0	0	0
13	उरांव	13.47	19.61	22.31	26.39	8.49	6.27	3.46
	औसत	**26.83**	**24.13**	**22.57**	**21.51**	**2.16**	**1.86**	**0.94**

स्रोतः व्यक्तिगत सर्वेक्षण 2016

3. **माध्यमिक शिक्षा** –सर्वेक्षित परिवारों में माध्यमिक शिक्षा औसत 20.08 प्रतिशत है। यह शिक्षा ग्राम बिहारपुर में सर्वाधिक 24.65 प्रतिशत तथा सबसे कम ग्राम फत्तेहपुर में 13.64 प्रतिशत है। जनजातीय आधार पर कोड़ाकू में सर्वाधिक 34.36 प्रतिशत एवं पण्डो में 26.32 प्रतिशत है।
4. **उच्चतर माध्यमिक शिक्षा** –सर्वेक्षित परिवारों में उच्चतर माध्यमिक शिक्षा का औसत 17.91 प्रतिशत है। यह प्रतिशत ग्राम तुर्रीडीह में सर्वाधिक 27.47 प्रतिशत एवं सबसे कम ग्राम तोनी में 12.93 प्रतिशत है। जनजतीय आधार पर चेरवा में सर्वाधिक 46.59 प्रतिशत एवं गोंड में 32.32 प्रतिशत है।

आरेख क्र. 1.1
सरगुजा जिला : जातिवार शैक्षणिक स्तर

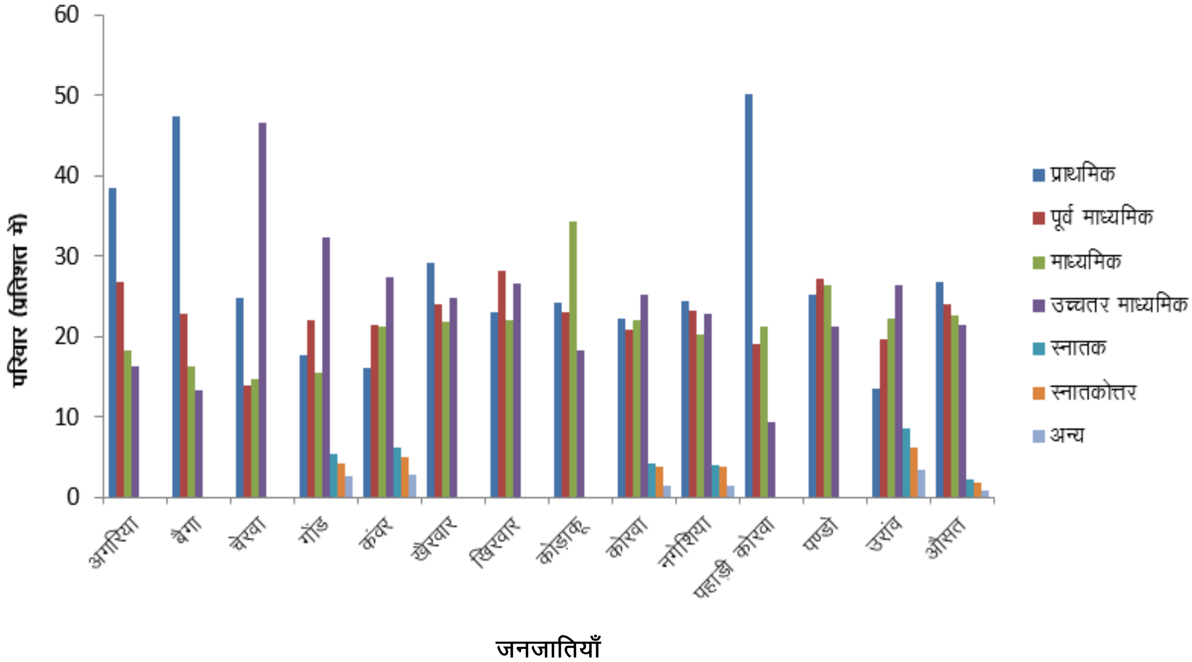

आरेख क्र. 1.2
चयनित ग्रामों में जातिवार शैक्षणिक स्तर

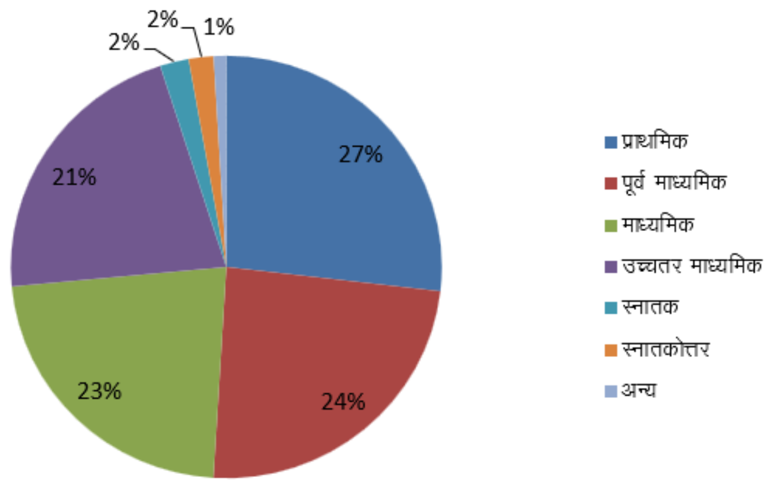

5. **स्नातक स्तर शिक्षा** – सर्वेक्षित परिवारों में स्नातक स्तर शिक्षा का औसत 6.84 प्रतिशत है। यह प्रतिशत ग्राम रतासिली में सर्वाधिक 16.44 प्रतिशत एवं सबसे कम ग्राम तोनी में 1.7 प्रतिशत है। जनजातीय आधार पर उराँव में सर्वाधिक 8.49 प्रतिशत एवं कंवर में 6.21 प्रतिशत है।

6. **स्नातकोत्तर स्तर शिक्षा** – सर्वेक्षित परिवारों में स्नातकोत्तर शिक्षा का औसत 3.56 प्रतिशत है। यह प्रतिशत ग्राम रतासिली में सर्वाधिक 11.11 प्रतिशत एवं सबसे कम ग्राम रजखेता में 0.63 प्रतिशत है। जनजातीय आधार पर उराँव में सर्वाधिक 6.27 प्रतिशत एवं कंवर में 2.83 प्रतिशत है।

7. **अन्य शिक्षा** – सर्वेक्षित परिवारों में अन्य शिक्षा का औसत 2.47 प्रतिशत है। यह प्रतिशत ग्राम सिलसिला में सर्वाधिक 6.41 प्रतिशत एवं सबसे कम ग्राम राजखेता में 0.24 प्रतिशत है। जनजातीय आधार पर उराँव में 3.46 प्रतिशत, कंवर 2.83 प्रतिशत, गोंड 2.71 प्रतिशत, कोरवा 1.49 प्रतिशत एवं नगेशिया 1.36 प्रतिशत है। अन्य जनजातियों में इसका अभाव है।

सरगुजा जिले के विभिन्न विकासखंडों में शिक्षा के स्तर में उल्लेखनीय अंतर पाया जाता है। अम्बिकापुर जैसे अपेक्षाकृत विकसित क्षेत्रों में विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं परिवहन सुविधाओं की उपलब्धता अधिक होने के कारण शैक्षिक स्तर बेहतर है। इसके विपरीत दूरस्थ एवं वन क्षेत्रों में स्थित ग्रामों में विद्यालयों की संख्या कम तथा शैक्षिक संसाधन सीमित हैं। परिणामस्वरूप इन क्षेत्रों के विद्यार्थियों को शिक्षा प्राप्त करने में अधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। यह स्थिति जिले में क्षेत्रीय शैक्षिक विषमताओं को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करती है। विद्यालयी अवसंरचना शिक्षा की गुणवत्ता को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है। अध्ययन से ज्ञात होता है कि कई विद्यालयों में भवन, पुस्तकालय, प्रयोगशाला, खेल मैदान तथा स्वच्छ पेयजल जैसी सुविधाएँ उपलब्ध हैं, किन्तु दूरस्थ जनजातीय क्षेत्रों में अभी भी इन सुविधाओं का अभाव पाया जाता है। कई विद्यालयों में शिक्षकों की कमी, अपर्याप्त कक्ष–कक्षाएँ तथा शैक्षणिक संसाधनों की न्यूनता विद्यार्थियों के शैक्षणिक विकास में बाधा उत्पन्न करती है। इसलिए अवसंरचनात्मक विकास जनजातीय शिक्षा के सुधार के लिए आवश्यक है।

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि शिक्षा एवं सामाजिक–आर्थिक स्थिति के बीच घनिष्ठ संबंध है। जिन परिवारों की आर्थिक स्थिति बेहतर है, उनके बच्चों की विद्यालयी उपस्थिति, शैक्षिक उपलब्धि तथा उच्च शिक्षा में सहभागिता अधिक पाई जाती है। इसके विपरीत निर्धन परिवारों के बच्चे शिक्षा के प्रति कम अवसर प्राप्त कर पाते हैं। गरीबी, बेरोजगारी तथा संसाधनों की कमी शिक्षा की निरंतरता को प्रभावित करती है। अतः सामाजिक एवं आर्थिक विकास जनजातीय शिक्षा के उन्नयन के लिए आवश्यक है। सरगुजा जिले की भौगोलिक परिस्थितियाँ भी जनजातीय शिक्षा को प्रभावित करती हैं। जिले का अधिकांश भाग वनाच्छादित एवं पहाड़ी है, जिसके कारण अनेक ग्राम परिवहन एवं संचार सुविधाओं से पूर्णतः नहीं जुड़े हैं। बरसात के मौसम में कई क्षेत्रों का संपर्क बाधित हो जाता है, जिससे विद्यार्थियों की नियमित विद्यालयी उपस्थिति प्रभावित होती है। भौगोलिक दुर्गमता, शिक्षा की पहुँच और गुणवत्ता दोनों को प्रभावित करने वाला प्रमुख कारक है। जनजातीय शिक्षा के विकास हेतु सरकार द्वारा संचालित छात्रवृत्ति, निःशुल्क पाठ्यपुस्तक वितरण, मध्यान्ह भोजन योजना तथा एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय जैसी योजनाओं का सकारात्मक प्रभाव देखा गया है। इन योजनाओं के परिणामस्वरूप विद्यालयी नामांकन में वृद्धि हुई है तथा शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ी है। हालांकि योजनाओं का लाभ सभी क्षेत्रों तक समान रूप से नहीं पहुँच पाया है, जिसके कारण कुछ क्षेत्रों में अपेक्षित परिणाम प्राप्त नहीं हुए हैं।

निष्कर्ष –

निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि सरगुजा जिले की अनुसूचित जनजातियों की शैक्षिक स्थिति में निरंतर सुधार हो रहा है, तथापि विभिन्न ग्रामों एवं क्षेत्रों के मध्य शैक्षणिक स्तर में उल्लेखनीय विषमताएँ देखने को मिलती हैं। अध्ययन से स्पष्ट है कि शैक्षणिक सुविधाओं की उपलब्धता, आर्थिक स्थिति, भौगोलिक दुर्गमता तथा जागरूकता का स्तर जनजातीय शिक्षा को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक हैं। जिन ग्रामों में विद्यालयी सुविधाएँ एवं आवागमन के साधन अपेक्षाकृत बेहतर हैं, वहाँ शिक्षा का स्तर भी उच्च पाया गया। इसके विपरीत दूरस्थ एवं दुर्गम

क्षेत्रों में शैक्षिक उपलब्धियाँ अपेक्षाकृत निम्न स्तर की पाई गईं। अतः सरगुजा जिले में जनजातीय शिक्षा के विकास के साथ–साथ क्षेत्रीय शैक्षणिक विषमताएँ भी विद्यमान हैं, जिन्हें दूर करने की अति आवश्यकता है। अतः यह कहा जा सकता है कि जनजातीय समुदायों की शैक्षिक स्थिति में सुधार के लिए केवल शैक्षणिक सुविधाओं का विस्तार ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि सामाजिक जागरूकता, आर्थिक सहयोग तथा क्षेत्रीय संतुलित विकास को भी समान रूप से महत्व देना आवश्यक है। शिक्षा के क्षेत्र में विद्यमान ग्रामवार एवं क्षेत्रीय विषमताओं को कम करने के लिए स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप योजनाएँ तैयार कर उनके प्रभावी क्रियान्वयन की आवश्यकता है, जिससे जनजातीय समाज का सर्वांगीण विकास संभव हो सकेगा।

संदर्भ–

1. मौर्य, एस.डी. (2013) : सामाजिक भूगोल, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, पृ. 69
2. रात्रे, चैतराम (2011) : अनुसूचित जनजातियों का सामाजार्थिक मूल्यांकन एवं भौगोलिक संदर्भ, मानसी पब्लिकेशन, दिल्ली, पृ. 81
3. Brahmanandam, T and Babu, T. Basu (2016) : Educational Status among the Scheduled Tribes: Issues and Challenges, The NSHU Journal, Vo. XIV, No.2, P.77
4. हसनैन, नदीम (2013) : जनजातीय भारत, जवाहर पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, P.179, 180
5. Montaya, Silvia, (2018) : Defining literacy, UNESCO institute for statistics, Germany.
6. नायडू, पी.आर. (1997) : आदिवासी विकास की समस्याएं, राधा पब्लिकेशन, दिल्ली, पृ. 133
7. बघेल, डी.एस. एवं बघेल, किरण, भारतीय समाज, कैलाश पुस्तक सदन, भोपाल, पृ. 298
8. Dutta, Mahua, (2012) : Status of literacy in Purba Medinipur District, West Bengal An overview, Geographical Review of India, Kolkata, Vol. 74, No.2, PP.140
9. Suresh, P.R and Cheeran, Mariya T (2015) : Education exclusion of scheduled Tribes in India, International Journal of innovation Research and Development, Vol.4, Issue 10, PP. 135